मेरे जैसा एक मैं रहता है|

अमरेंद्र कुमार

मेरे अंदर भी मेरे जैसा एक मैं रहता है,
एक भी सुनता न मेरी वो, हरदम बस अपनी कहता है|
मेरे अंदर भी मेरे जैसा एक मैं रहता है|
जो कह न सका कभी किसी से मैं,वह सब वो मुझसे कहता है,
कभी अकेले में महफ़िल जैसा, तो कभी महफ़िल में एकांत सा रहता है|
कभी समंदर की बेकाबू लहरों जैसा
तो कभी नदी की धारा जैसा शांत बहता है|
मेरे अंदर भी मेरे जैसा एक मैं रहता है|
मैं शायद सो भी जाऊँ रातों में,
पर वो है जो मुझमें हरदम जगता रहता है|
जिन्हें देखने को तरस जाती हैं ये आंखें मेरी,
और एक वो है जो कि हर रात उनसे मिलते रहता है|
मेरे अंदर भी मेरे जैसा एक मैं रहता है|
चाहूँ मैं जिसकी बातें भूलना, ये उसी के तराने गाते रहता है,
रहता है ये अंदर मेरे, पर वश में न ये मेरे रहता है|
कोई कहे मुझे अनाड़ी, तो कोई अक्ल से कम कहता है,
बस एक वही तो है, जो मुझे नहीं किसी से कम कहता है|
मेरे अंदर भी मेरे जैसा एक मैं रहता है|
कभी बिना बात के हंसाता है ये मुझे,
कभी हर एक बात पर रूलाता रहता है,
एक वो ही तो है खुद को जगाकर,

Scanned with OKEN Scanner

मुझे पूरी रात सुलाता रहता है|
मेरे अंदर भी मेरे जैसा एक मैं रहता है|
मैं कभी न समझा उसकी दुनिया को,
पर वो मुझे दुनियादारी समझाता रहता है|
कोई कहे ये वहम है मेरा,
तो कोई इसे एक पागलपन सा कहता है,
पर मुझे तो पता है ये,
कि मेरे अंदर मेरे अपनों का एक अपनापन सा रहता है|
हाँ मुझे पता है ये कि,
मेरे अंदर भी मेरे जैसा एक मैं रहता है|

Scanned with OKEN Scanner